नव संवत् के स्वागत में प्रकृति ने वंदनवार सजाये

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा अर्थात् वर्ष प्रतिपदा, यह तिथि हिन्दू काल गणनानुसार नव वर्ष के प्रारम्भ का शुभ दिन है। 30 मार्च 'सिद्धार्थ' नामक विक्रम सम्वत् 2082 का प्रथम दिवस है। प्रत्येक वर्ष का एक नाम होना, विक्रम सम्वत् की अपनी विशेषता है। %पिंगल' नामक सम्वत् की विदाई कर लोक 'सिद्धार्थ' नामक सम्वत् का स्वागत-अभिनंदन करेगा। हालांकि भारत वर्ष में विश्व के अन्य देशों की तरह मुख्य रूप से अंग्रेजी ग्रेगेरियन कलैंडर के अनुसार ही कार्यक्रम संपादित होते हैं पर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्कारों के निर्वहन् का आधार विक्रमी संवत् ही है। वर्तमान में विश्व में प्रचलित काल मापन प्रणालियों यथा हिन्दू, चीनी, मिस्री, पारसी, तुर्की, यहूदी, रोमन, हिजरी में हिन्दू काल गणना प्रणाली

सर्वाधिक प्राचीन, प्रामाणिक, श्रेष्ठ और वैज्ञानिक है। वर्ष प्रतिपदा कई ऐतिहासिक घटनाओं और संदर्भों को सहेजे हुए है। इसी दिन प्रातःकाल से ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना प्रारम्भ की थी। लंका विजय पश्चात अयोध्या में श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था तो युधिष्ठिर ने भी राज्यारोहण कर अपने नाम का सम्वत् चलाया था। सिखों के द्वितीय गुरु अंगद देव तथा सिंधी समाज के संत झूलेलाल का प्राकट्योत्सव भी है। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना भी इसी तिथि को की थी। डॉ0 केशव बलिराम हेडगेवार ने इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1925 में की थी। शक्ति और भक्ति का प्रतीक पर्व नवरात्र भी प्रारम्भ होता है। ग्रिगेरियन कलैंडर में 57 जोड़ने पर विक्रम संवत् मिल जाता है।

केवल हिन्दू काल प्रणाली में ही निमेष से लेकर (बल्कि उससे भी छोटी इकाईयों परमाणु, अणु, त्रसरेणु, त्रुटि, बोध, काष्ठा और लव आदि) युग, मनवन्तर और कल्प तक की गणना व्यवहार में है। किसी भी अनुष्ठान एवं सामान्य धार्मिक कर्म-काण्ड प्रारम्भ करने के पूर्व यजमान हाथ में जल, कुश, पुष्प, अक्षत आदि लेकर संकल्प करते हुए मंत्र पढ़ता है जिसमें युगाब्द, मन्वंतर, संवत, तिथि, दिन, समय, मास आदि सहित ब्रह्माण्ड की आयु तक की गणना हमारी परम्परा में जीवनचर्या में सम्मिलित है और इस प्रकार हमने अनन्त काल-यात्रा को वर्तमान से जोड़े रखा है। हिन्दू काल गणना सूर्य, चन्द्र व पृथ्वी की गतियों पर आधृत है। एक वर्ष को 2 अयन, 12 मास, 24 पक्ष, 52 सप्ताह, 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है। सैकड़ों वर्षों बाद होने वाली आकाशीय घटनाओं, सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण, पूर्णमासी, अमावस्या, पर्व-त्योहार आदि की सटीक घोषणा हिन्दू पंचांग में ही सम्भव दिखायी देती है। पंचांग से ही कुम्भ मेला के स्नान-पर्व के समय, मुहूर्त आदि की जानकारी प्राप्त कर लाखों श्रद्धालु पवित्र नदियों में डुबकी लगाने, हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक बिना किसी विज्ञापन एवं प्रचार के पहुँचते हैं। यह दृश्य भारतीय संस्कृति से अपरिचित विदेशियों को विस्मय में डाल देता है। ज्योतिषविद् लगध ने ग्रन्थ 'ज्योतिष वेदांग' में काल मापन की प्रणाली प्रथम बार प्रस्तुत करते हुए काल मापन के यंत्र भी बनाये। सम्राट विक्रमादित्य की राजसभा के नौरत्नों यथा धनवन्तरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु (शंशकु), वेतालभटट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि में से वराहमिहिर ने %पंच सिद्धान्तिका' और %वृहत्संहिता' जैसे विज्ञान ग्रन्थ विश्व को प्रदान किये। जिसमें ज्योतिष, भूगर्भशास्त्र, पारिस्थितिकी, द्रवयांत्रिकी पर महत्वपूर्ण कार्य प्रस्तुत किया गया है। काल-ज्ञान हेतु उज्जयिनी भारत का केन्द्र बिन्दु है जैसे इंग्लैण्ड में ग्रीनविच है। जयपुर एवं दिल्ली की 'जन्तर मन्तर' वेधशालाएं आज भी सभी का ध्यान खींचती हैं। अन्य काल प्रणाली तुलनात्मक रूप से अवैज्ञानिक एवं अप्रमाणिक हैं। रोमन कलेण्डर में अभी 400 वर्ष पूर्व तक संशोधन होते रहे हैं। कभी रोमन कलेण्डर में 10 महीने होते थे, अगस्त और फरवरी महीनों में 30 दिन होते थे।

विश्व में हमें नव वर्ष के स्वागत के दो दृश्य दिखाई देते हैं जो सम्बंधित समाज की मानवीय दृष्टि, समग्र चिंतन और चेतना को प्रतिबिम्बित करते हैं। पहली जनवरी को दुनिया भर में नये वर्ष का आगाज बड़े-बड़े आयोजन करके किया जाता है जिसमें पटाखे फोड़ने से आकाश धुआं से भर जाता है। देर रात तक पार्टियों का दौर चलता है। शराब परोसी जाती है और अश्लीलता का नंगा प्रदर्शन होता है। प्रकृति भी ठंड से सिकुड़ी सहमी बर्फ की चादर ओढ़े नीरवता समेटे निद्रा में रहती है। न कहीं कोई खिलखिलाती-महमहाती फूलों की बेलें दिखतीं न फसलों का जीवंत जीवन। न पक्षियों का मधुर कलरव सुनाई देता न ही भौंरों की गुंजार। न तितलियों के इंद्धनुषी रंग दिखते न ही गिलहरियों, नेवलों की धमाचौकड़ी। पवन में न ऊर्जा, उमंग भरी सरसराहट और न ही मादक सुवास। हवा बहती है तो लगता है प्राणीमात्र को वेदना का शूल चुभाते देह की पोर-पोर में टीस उत्पन्न कर रही है। आम जन में न कुछ नया पाने का उत्साह न ही कुछ नये रचने-गढ़ने की ललक। वह तो स्वयं को गर्म कपड़ों में लपेटे गठरी बना बैठा रहता है। नदियों का जल बर्फ बन जल-जीवों के लिए संकट का कारण बनता है। खेतों में श्वेत चादर के नीचे बीज कराहता है। लेकिन हिन्दू नव वर्षागमन के पूर्व ही प्रकृति सुन्दरी मानो उसके स्वागत में सज-धज नवल रूप धारण कर लेती है। खेतों में अनेक फसलें अपने यौवन के अल्हड़पन में वासन्ती पवन के प्रेम में डूबी आनन्दमग्न-झूमती दिखाई पड़ती हैं। आंखों को सुख देता खेतों में दूर-दूर तक फैला सरसों का पीलापन है तो अलसी का नीलापन भी। मटर के दूध से सफेद फूल हैं तो मसूर की लालिमा भी। पलाश प्रीति के केसरिया रंग से धरा के भाल को सुशोभित कर रहा है तो सेमर खुश हो लाल सुमन उछाल रहा है। ताल-कूप का नीर दर्पण बन तरुणियों के विधु-वदन को स्वयं में सहेज खुश हो रहे हैं तो स्वच्छ सलिला सरिताएं प्राणियों को अमिय पान करने को न्यौता दे रही हैं। तोता, मैना, गौरैया, बसंता की मिठास भरी चहचहाहट है तो कोयल की मनहरण कूक भी। अरण्य में स्पन्दन है। लगता है जीवन सांसें ले रहा है और प्राणियों में आशा का संचार कर लोक सम्मुख 'चरैवेति-चरैवेति' के वैदिक संदेश की चिट्ठी बांच रहा है। कचनार, हरसिंगार, गुड़हल और गुलाब के विविध रंग बिखरे हैं तो आम की बौरें मन बौरा रही हैं। चने के होला की महक परिवेश में तैर रही है तो गन्ने के रस से बनाये जा रहे गुड़ की सोंधापन भी। शहनाई की स्वर लहरियां हैं तो मृदंग की कोमल थाप भी। पर न कहीं शोर है न हिंसा-अशान्ति, न कठोर-कलुष वचन हैं न पीड़ा-प्रताड़ना का रुदन। बस, चतुर्दिक सह-अस्तित्व, न्याय, करुण, दया, ममता, समता, सौहार्द, बंधुत्वभाव, सहयोग की भावना एवं स्वर हैं। तभी तो भोर से ही देवालयों में विश्व कल्याण की भावना से लोक देवार्चन और प्रार्थना कर रहा है। यज्ञ-हवन आदि हो रहे हैं और गोघृत, शर्करा, तिल, जौ, अक्षत, गुड़, गुरिज एवं औषधीय द्रव्यों की आहुति दी जा रही है। द्वार-द्वार पर मंगल वाद्य बज रहे हैं। जन सामान्य घरों में भगवा पताकाएं फहराते हैं और कलश स्थापित कर बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। मलय बयार बहने से लोकजीवन में उल्लास-उमंग का प्रवाह है और मानवता के कल्याण का संकल्प भी। यह नव संवत लोक के लिए सुख, समृद्धि, शान्ति, सहकार, उत्कर्ष, उल्लास एवं अमित उत्साह का वाहक सिद्ध होगा तथा विश्व हिंसा, अराजकता, कलुष-कुभाव, व्यभिचार, नग्नता से मुक्त हो प्रकृति का पोषण कर मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु बद्ध परिकर होगा, ऐसा विश्वास करते हुए सभी के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

- प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं स्तम्भकार हैं। बाँदा, उ0प्र0। मोबा - 9452085234

एम डी डी आफ इंडिया हरियाणा के पन्द्रह जिलों में कर रहा जस्ट फॉर राइट्स के तहत काम

इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की रोक, जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन करेगा बच्ची की पैरवी

बच्ची से बलात्कार के प्रयास के एक मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर तीखी टिप्पणियों के साथ सुप्रीम कोर्ट की रोक को गैरसरकारी संगठन एम. डी.डी. ऑफ़ इंडिया ने बच्चों के अधिकारों की सुरक्षा व संरक्षण की दिशा में अहम कदम करार दिया है। शीर्ष अदालत ने इस फैसले के खिलाफ जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) की विशेष अनुमति याचिका को स्वीकार करते हुए उसे पीड़िता की पैरवी की इजाजत दी है।

बाल अधिकारों की सुरक्षा व संरक्षण के लिए देश के 416 जिलों में काम कर रहे 250 से भी ज्यादा गैरसरकारी संगठनों का नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन (जेआरसी) इस कानूनी लड़ाई की अगुआई करेगा ताकि पीड़िता की गरिमा और अधिकारों की रक्षा हो सके और उसके साथ न्याय सुनिश्चित हो। करनाल में बाल अधिकारों की सुरक्षा व संरक्षण के लिए कार्य कर रहा एम. डी.डी. ऑफ़ इंडिया जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन का एक अहम सहयोगी है।

एम. डी.डी. ऑफ़ इंडिया के कार्यकारी निदेशक श्री सुरिंदर सिंह मान जी ने कहा अगर देश में एक भी बच्चा अन्याय का शिकार है तो जेआरसी उसके साथ है। न्यायपालिका। बच्चों के अधिकारों के प्रति संवेदनशील है जो सुप्रीम कोर्ट के मामले का स्वतः संज्ञान लेने से स्पष्ट है। जेआरसी अब इस बच्ची को न्याय दिलाने के प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ेगा। जेआरसी बच्चों के लिए एक न्यायपूर्ण दुनिया बनाने की लड़ाई लड़ रहा है और हम जिले से बच्चों के खिलाफ बाल विवाह, बाल यौन शोषण और बाल मजदूरी जैसे अपराधों के खात्मे के लिए प्रतिबद्ध हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर रोक लगाने के साथ ही तीखी टिप्पणी करते हुए कहा कि यह स्तब्ध करने वाला और असंवेदनशील फैसला है। इलाहाबाद हाई कोर्ट ने 11 साल की एक पीड़िता के मामले में फैसले में कहा था कि वक्ष पकड़ना, सलवार का नाड़ा खोलना और उसे घसीट कर पुलिया के नीचे ले जाने को बलात्कार का प्रयास नहीं माना जा सकता। शीर्ष अदालत ने भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार और मामले से जुड़े सभी पक्षों को नोटिस जारी किए हैं।

मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति एजी मसीह की खंडपीठ ने हाई कोर्ट के फैसले में जाहिरा तौर पर नजर आने वाली असंवेदनशीलता पर कड़ी आपत्ति जताई और उसकी टिप्पणियों को चौंकाने वाला और कानून की किसी भी समझ से रहित करार दिया।

जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन और पीड़िता के परिवार की ओर से अधिवक्ता रचना त्यागी ने कहा, इस मामले में साढ़े तीन साल से अधिक समय तक कोई एफआईआर दर्ज नहीं की गई और तीन साल से ज्यादा समय तक कानूनी कार्यवाही बिना किसी औपचारिक जांच के चलती रही। एक गरीब और कमजोर परिवार की इस बच्ची के साथ यह लापरवाही गंभीर अन्याय है। हमें इस बात से राहत मिली है कि सुप्रीम कोर्ट ने हमारी विशेष अनुमति याचिका को स्वीकार कर लिया है। हम पीड़िता की हरसंभव मदद और उसे न्याय दिलवाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

खंडपीठ ने विवादित फैसले पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि फैसले में की गई कुछ टिप्पणियां, विशेष रूप से पैरा 21, 24 और 26 की सामग्रियां घोर असंवेदनशील हैं। पीठ ने कहा कि यह फैसला चार महीने लंबी विचार-विमर्श की प्रक्रिया के बाद आया, फिर भी यह अमानवीय और कानून के सिद्धांतों के विपरीत है।

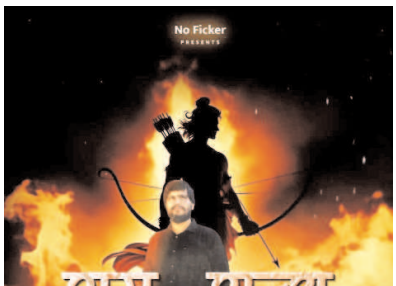

रामराज्यः सिनेमा के आईने में समाज का सच

रामराज्य यह सिर्फ एक ऐतिहासिक या धार्मिक शब्द नहीं, बल्कि एक ऐसा आदर्श है, जो सत्य, न्याय और समानता की स्थापना करता है। परंतु क्या आज के दौर में यह सिर्फ एक कल्पना मात्र रह गई है? इसी प्रश्न को गहराई से छूती है फ़िल्म रामराज्य, जो राजनीति और समाज के छिपे हुए पहलुओं को उजागर करती है। यह सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि हमारी वर्तमान व्यवस्था पर एक विचारणीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

सपनों में था जो रामराज्य, वो हक़ीक़त में कब आएगा?

सत्ता की चौखट पर बैठा सच, क्या कभी नज़र उठाएगा?

6 अप्रैल को होगी रिलीज़

नोफ़िकर संस्था द्वारा निर्मित पहली शॉर्ट फिल्म रामराज्य 6 अप्रैल, रामनवमी के दिन नोफ़िकर के फेसबुक और यूट्यूब पेज पर प्रदर्शित की जाएगी। इस शॉर्ट फिल्म में मध्य प्रदेश के 14 जिलों ङ्क इंदौर, सिवनी, सिंगरौली, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, मुरैना, अशोक नगर, बैतूल, कटनी सहित अन्य जिलों के 24 कलाकारों ने अभिनय किया है।

सभी वर्गों की भागीदारीः यह फ़िल्म सामाजिक समरसता की मिसाल पेश करती है, जिसमें ब्राह्मण, ठाकुर, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग और मुस्लिम समुदाय के कलाकारों ने समान रूप से योगदान दिया है।

जनता के हित की बातें, क्या सिर्फ किताबों में रहेंगी?

या फिर बदलाव की आंधी आकर, जंजीरों को तोड़ेंगी?

समाज के ज्वलंत मुद्दों पर केंद्रित

रामराज्य शॉर्ट फिल्म में शिक्षा, किसानों की समस्या, जातिवाद, बेरोजगारी, महिला सुरक्षा, अवैध शराब और दल-बदल जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों का व्यंगात्मक चित्रण किया गया है। यह फिल्म वर्तमान परिदृश्य को ध्यान में रखकर बनाई गई है, जिसका उद्देश्य आम जनता के वास्तविक दर्द को सरकार तक पहुंचाना है।

नोफ़िकरः सच्चाई की आवाज़

नोफ़िकर सिर्फ एक मीडिया संगठन नहीं, बल्कि पत्रकारिता की उस परंपरा का अनुसरण करता है, जो निष्पक्षता, ईमानदारी और समाज सुधार की बात करती है। यह संस्था न केवल सच्चाई को सामने लाने के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि अपने सदस्यों को भी पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ कार्य करने की प्रेरणा देती है। यहाँ हर व्यक्ति को परिवार जैसा सम्मान दिया जाता है, जाति-धर्म से ऊपर उठकर एकता की भावना को प्रोत्साहित किया जाता है।

जहाँ हर धर्म बराबर हो, जहाँ न्याय न बिकता हो,

जहाँ शासन भी सेवक बनकर, जनता का हित दिखता हो।

समाज के लिए एक नई दिशा

रामराज्य जैसी फिल्में और नोफ़िकर जैसे संगठन यह साबित करते हैं कि अगर सही दिशा में प्रयास किए जाएँ, तो बदलाव संभव है। हमें अपनी सोच और व्यवस्था को एक नए दृष्टिकोण से देखने की जरूरत है। सिर्फ फिल्म देखना या खबरें पढ़ना काफी नहीं, बल्कि उन मूल्यों को अपनाना और आगे बढ़ाना भी ज़रूरी है।

हमने देखा है अंधकार, पर दीप जलाना बाकी है, रामराज्य सिर्फ कहानी नहीं, इसे हक़ीक़त बनाना बाकी है।

आज वक्त है एक नई चेतना जगाने का, उस आदर्श समाज की ओर बढ़ने का, जहाँ हर व्यक्ति समान हो, न्याय सर्वोपरी हो और सच्चाई की विजय हो।

लेखिकाः मोनिका शर्मा

हनुमानजी की भक्ति के गहरे आयाम

हनुमानजी की भक्ति पर और गहराई से जानकारी प्रदान करने के लिए हमें उनके चरित्र के विभिन्न पहलुओं, उनके भक्ति मार्ग की व्यापकता, और भारतीय ग्रंथों व परंपराओं में उनकी स्थिति को और विस्तार से देखना होगा।

हनुमानजी की भक्ति न केवल श्रीरामचरितमानस तक सीमित है, बल्कि यह वाल्मीकि रामायण, पुराणों, और लोक परंपराओं में भी एक विशेष स्थान रखती है। उनकी भक्ति का स्वरूप इतना व्यापक और प्रेरणादायक है कि यह भक्तों को आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्ति प्रदान करता है।

हनुमानजी की भक्ति का दार्शनिक आयाम

हनुमानजी की भक्ति को केवल भावनात्मक या कर्म आधारित भक्ति तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसमें एक गहरा दार्शनिक आधार भी है, जो अद्वैत, भक्ति और कर्म योग के तत्वों को समाहित करता है।

1. दास्य भक्ति का चरम

हनुमानजी की भक्ति को दास्य भक्ति (ईश्वर के प्रति सेवक भाव) का सर्वोच्च उदाहरण माना जाता है। वे श्रीराम को अपना स्वामी मानते हैं और स्वयं को उनका दास। यह भाव अद्वैत दर्शन से भी जुड़ता है, जहां आत्मा और परमात्मा के बीच का अंतर मिट जाता है। हनुमानजी का श्रीराम में पूर्ण विलय उनकी भक्ति को एक दार्शनिक ऊंचाई प्रदान करता है। वे कहते हैंः

जब लगि रघुनाथ कर होई, तब लगि हनुमत कछु नहिं कोई। (जब तक रघुनाथ हैं, तब तक हनुमान कुछ भी नहीं है।)

यह उनके आत्म-शून्यता और ईश्वर में समर्पण के दर्शन को दर्शाता है।

2. कर्म और भक्ति का संयोग

हनुमानजी की भक्ति में कर्म योग का भी समावेश है। वे श्रीराम के कार्य को पूर्ण करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, चाहे वह समुद्र पार करना हो, लंका जलाना हो या संजीवनी बूटी लाना हो। उनकी भक्ति निष्किय नहीं है; यह सक्रिय और परिणामोन्मुखी है। यह हमें भगवद्गीता के उस संदेश की याद दिलाता है कि कर्म को भक्ति के साथ जोड़कर किया जाए तो वह ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग बन जाता है।

3. शक्ति का आध्यात्मिक रूप

हनुमानजी की शक्ति केवल शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक भी है। उनकी भक्ति हमें सिखाती है कि सच्ची शक्ति वह है जो ईश्वर की इच्छा के अधीन हो। वे अपनी शक्ति का उपयोग कभी स्वार्थ के लिए नहीं करते, बल्कि इसे श्रीराम की सेवा में समर्पित करते हैं। यह शक्ति और भक्ति का संतुलन उनके चरित्र को अद्वितीय बनाता है।

हनुमानजी की भक्ति के विभिन्न स्वरूप

हनुमानजी की भक्ति को विभिन्न ग्रंथों और परंपराओं में अलग-अलग रूपों में देखा जा सकता है।

1. वाल्मीकि रामायण में हनुमानजी की भक्ति

वाल्मीकि रामायण में हनुमानजी को श्रीराम का प्रिय सेवक और सुग्रीव का मित्र बताया गया है। उनकी भक्ति का पहला परिचय तब मिलता है जब वे राम-लक्ष्मण से किष्किंधा में मिलते हैं। सुंदरकांड में उनकी भक्ति का चरम दिखता है, जहां वे सीताजी की खोज के लिए लंका जाते हैं। वाल्मीकि ने उनके बल, बुद्धि और भक्ति का वर्णन इस प्रकार किया हैः बुद्धिमान् बलवान् शूरः हनुमान् मारुतात्मजः। (हनुमान बुद्धिमान, बलवान और साहसी हैं, जो वायु के पुत्र हैं।)

2. श्रीरामचरितमानस में भक्ति का स्वरूप

तुलसीदास ने हनुमानजी की भक्ति को लोकप्रिय और भावनात्मक रूप दिया। सुंदरकांड में उनकी हर क्रिया श्रीराम के प्रति प्रेम और समर्पण से ओतप्रोत है। तुलसीदास ने उनकी भक्ति को जनसामान्य के लिए सरल और प्रेरक बनाया, जैसेः

राम दूत मैं मातु जानकी, सत्य सपथ करुनानिधान की। (मैं श्रीराम का दूत हूं, माता जानकी, करुणा के धाम की सत्य शपथ।)

3. हनुमान चालीसा में भक्ति की महिमा

हनुमान चालीसा में उनकी भक्ति को संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें उनकी शक्ति, भक्ति और श्रीराम के प्रति निष्ठा का गुणगान हैः

राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवनसुत नामा। (आप श्रीराम के दूत हैं, अतुलित बल के धाम, अंजनी के पुत्र और पवनसुत के नाम से प्रसिद्ध।)

यह चालीसा उनकी भक्ति को हर घर तक पहुंचाती है।

4. लोक परंपराओं में भक्ति

भारत के गांवों और कस्बों में हनुमानजी की भक्ति लोक कथाओं, भजनों और पूजा के रूप में जीवित है। लोग उन्हें संकटमोचन मानते हैं और मंगलवार-शनिवार को उनकी पूजा करते हैं। उनकी मूर्तियों को सिंदूर चढ़ाना और सुंदरकांड का पाठ करना उनकी भक्ति के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है।

हनुमानजी की भक्ति के प्रतीक और उनकी व्याख्या

हनुमानजी की भक्ति से जुड़े कुछ प्रतीकों का गहरा अर्थ हैः

गदाः उनकी गदा शक्ति और संकट निवारण का प्रतीक है। यह दर्शाती है कि भक्ति के साथ शक्ति का होना जरूरी है।

सिंदूरः हनुमानजी को सिंदूर चढ़ाने की परंपरा उनकी श्रीराम के प्रति प्रेम और समर्पण से जुड़ी है। कथा के अनुसार, उन्होंने सीताजी के मांग में सिंदूर देखकर पूछा, तो पता चला कि यह श्रीराम के लिए है। तब हनुमानजी ने स्वयं को सिंदूर से रंग लिया।

उड़ानः समुद्र पार करना उनकी भक्ति में असंभव को संभव बनाने की क्षमता का प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि भक्ति में कोई सीमा नहीं होती।

हनुमानजी की भक्ति का आधुनिक संदर्भ

आधुनिक समय में हनुमानजी की भक्ति का महत्व और भी बढ़ गया है। तनाव, अनिश्चितता और संघर्ष से भरे जीवन में उनकी भक्ति लोगों को मानसिक शांति और आत्मबल देती है। हनुमान चालीसा का पाठ और सुंदरकांड का आयोजन आज भी बड़े पैमाने पर होता है। लोग उनकी भक्ति से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में कठिनाइयों का सामना करते हैं।

1. मानसिक स्वास्थ्य में योगदान

हनुमानजी की भक्ति का पाठ और चिंतन मन को शांत करता है। उनकी शक्ति और विश्वास की कहानियां हमें आत्मविश्वास देती हैं।

2. नेतृत्व और प्रेरणा

हनुमानजी का चरित्र नेतृत्व के गुणों-निर्णय लेने की क्षमता, टीमवर्क और निष्ठा-का उदाहरण है। यह आधुनिक प्रबंधन और व्यक्तिगत विकास में भी प्रासंगिक है।

3. सामाजिक एकता

उनकी भक्ति विभिन्न समुदायों को जोड़ती है। हनुमान मंदिर और पाठ के आयोजन सामाजिक समरसता को बढ़ाते हैं।

हनुमानजी की भक्ति एक ऐसी शक्ति है जो भक्त को ईश्वर से जोड़ती है और जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शन करती है। यह भक्ति केवल श्रीराम के प्रति उनके प्रेम तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जीवन दर्शन है जो हमें निस्वार्थता, विश्वास, शक्ति और विनम्रता का पाठ पढ़ाता है। श्रीरामचरितमानस के सुंदरकांड से लेकर हनुमान चालीसा और लोक परंपराओं तक, उनकी भक्ति का हर रूप हमें प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन में भी ऐसी भक्ति और समर्पण लाएं। हनुमानजी की भक्ति का यह अनंत सागर हमें सिखाता है कि सच्चा भक्त वही है जो अपने स्वामी के लिए सब कुछ समर्पित कर दे और हर परिस्थिति में अडिग रहे। यही उनकी भक्ति की अमरता और गहराई का रहस्य है।

आनंद मोहन मिश्र

विवेकानंद केंद्र विद्यालय जयरामपुर. चांगलांग जनपद अरुणाचल प्रदेश दूरभाष - 9436870174

दिशा परमार्थिक लोक न्यास की बैठक में नए सदस्य जुड़े

महिदपुर।परुलेकर परिवार के सभी सदस्यों ने 28 मार्च 2025 को दिशा पारमार्थिक लोक न्यास के बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ की वार्षिक विशेष बैठक के लिए शालिनी भवन में उपस्थिति दर्ज कराई।इस बैठक के दौरान,बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए जिसमें निम्नलिखित सदस्यों को शामिल किया गयाः शिवानी परुलेकर,रोहन परुलेकर,रविंद्रपरुलेकर, प्रणव परुलेकर,अतुल परुलेकर,अल्पना लाड शोभा निरोखेकर,आरती सामंत,ज्योति नाइक, विपिन परुलेकर,लता मांजरेकर,नितिन परुलेकर बोर्ड ने अधिक पारदर्शिता और प्रभावी संचालन की दिशा में कदम बढ़ाते हुए बाहरी सदस्यों को भी शामिल किया हैः

कैलाश जोशी,सोहन बहन राजपूत,द्वारका प्रसाद व्यास

ये परिवर्तन ट्रस्ट की सार्वजनिक भलाई के प्रति प्रतिबद्धता को मजबूत करने के लिए है जो इस संस्थान का मूल आधार है।

दिशा पारमार्थिक लोक न्यास इन महत्वपूर्ण अपडेट्स की घोषणा करते हुए प्रसन्नता महसूस कर रहा है जिसमें परुलेकर परिवार के सदस्यों को प्रमुखता से शामिल किया गया है जो ट्रस्ट की स्थापना की गहरी जड़ों को दर्शाता है।

मुख्य नियुक्तियाँः

शिवानी परुलेकर-अध्यक्ष

रोहन परुलेकर-उपाध्यक्ष

रविंद्र परुलेकर-सचिव

प्रणव परुलेकर-संयुक्त सचिव

अतुल परुलेकर-कोषाध्यक्ष

बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज़ द्वारा निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गएः

-÷एक पेड़,प्रदीप सर के नाम÷शीर्षक से वृक्षारोपण अभियान 24 जून 2025 को आयोजित किया जाएगा जिसमें 500 पौधे वितरित करने की योजना है।

- तीन निर्धन मेधावी छात्रों को उनकी शैक्षणिक आवश्यकताओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

- आपत्तिजनक व्यवहार और ट्रस्ट के नियमों का पालन न करने के कारण गौरी परुलेकर और सोनल परुलेकर को ट्रस्ट से बर्खास्त किया गया है।

दिशा पारमार्थिक लोक न्यास अपने मिशन और मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध है और इन पहलों के माध्यम से सामुदायिक विकास और शैक्षणिक समर्थन को बढ़ावा देता है।